Devbhoomi Journal of Multidisciplinary Research (DJMR)
URL: www.usvv.ac.in/djmr Email: djmr@usvv.ac.in
Volume-1, Issue-2, Jul - Dec 2023

चित्रा मुद्गल की कहानियों में कामकाजी स्त्री

डॉ. सुमिता त्रिपाठी
सहायक आचार्य (तदर्थ)
दयाल सिंह सांध्य महाविद्यालय

चित्रा मुद्गल जी आधुनिक हिंदी साहित्य में अपना विशेष महत्व रखती हैं। इन्होंने अपने कथा साहित्य में सामान्य वर्ग से लेकर उच्च वर्ग की स्थिति एवं उसकी समस्याओं को अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है। समाज के चेहरे पर लगे कलंक को समाज के सामने लाने और उस कलंक को समाज से उखाड़ फेंकने की पूरी कोशिश वह कर रही हैं। चित्रा मुद्गल जी ने अपनी कहानियों में प्रेरक व सर्जक की भूमिका निभाते हुए अपनी भाव प्रवणता एवं संवेदनशीलता का परिचय दिया है। समाज में अनेक समस्याएँ विद्यमान हैं जिनमें से एक कामकाजी स्त्री की समस्या भी है। स्त्री देश की आधी आबादी है। समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है। स्त्री ने जब घर की दहलीज से बाहर कदम रखा तो वह कामकाजी बनी। हिंदी कहानी में कामकाजी स्त्री जीवन की चुनौतियों का सामना करती हुई एक चुनौती के रूप में उभरी।

जो कामकाज में लगा रहता है उसे कामकाजी कहा जाता है। आज दफ्तरों, घरों, बैंकों, विश्वविद्यालयों आदि में कार्य करने वाली स्त्रियों को कामकाजी स्त्री कहा जाता है। कामकाजी स्त्री कहने से यह अर्थ लिया जाता है कि जिन स्त्रियों का श्रम प्रकट रूप से अर्थोत्पादन में लगा हो। स्त्रियाँ घर के सभी छोटे-बड़े काम करती हैं किन्तु उन्हें कामकाजी महिलाओं के वर्ग से बाहर नहीं किया जा सकता है। हाँ पद के आधार पर कामकाजी स्त्री का भेद करके उन्हें यह नाम दिया जा सकता है।

सामाजिक विकास के साथ-साथ स्त्री भी महसूस करने लगी कि वह भी एक सामाजिक प्राणी है। समाज का एक जरूरी हिस्सा होने के नाते उसे भी स्वतंत्र होकर जीने का अधिकार है। समाज में बराबरी का अधिकार पाने के लिए स्त्रियाँ भी शिक्षा एवं स्वतंत्रता की मांग करने लगीं। स्त्रियों को यह एहसास हो गया था कि उसकी अवनति एवं पराभव का मूल कारण आर्थिक पराधीनता है और इससे मुक्ति के बिना स्त्री की मुक्ति संभव नहीं है। आज स्त्री-पुरुष एक दूसरे से कंधे-से-कंधा मिलाकर एक-दूसरे का सहयोग करते हैं और अपनी गृहस्थी को सुचारू रूप से चलाते हैं। कामकाजी बनने से स्त्री को जो सबसे बड़ा लाभ हुआ है वह है उसके व्यक्तित्व का विकास। आर्थिक स्वावलंबन प्राप्त कर स्त्री ने अपने आस्तित्व को पहचाना। जब स्त्री आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं थी तब वह पूरी तरह पुरुष पर आश्रित थी। अपने आश्रयदाता के अधीन रहकर उसके अत्याचारों को सहना पड़ता था। किन्तु आर्थिक स्वावलंबन प्राप्त कर वह जान गई

कि जब तक स्त्री पुरुषों के समान अधिकार, महत्व और मूल्यों की चाह या अपने भविष्य के द्वार अपनी कर्मठता से खोलने का साहस नहीं करती तब तक अपनी परवशता की स्थिति से मुक्त नहीं हो सकती। "पुरुष ने औरत के लिए एक दुनिया बनाने का अधिकार अपने पास रखा। उसने औरत की एक ऐसी अन्तर्वती दुनिया बनाई जिसमें उसको हमेशा के लिए कैद कर दिया किन्तु कोई भी अस्तित्व सदा सीमाबद्ध नहीं रह सकता। समर्पिता होने के बावजूद औरत चाहती है कि इस जैविक मादा स्तर से ऊपर उठे। अपनी सीमाओं का अतिक्रमण करे।"[1]

कामकाजी स्त्री को दोहरी जिम्मेदारियों का सामना करना पड़ा। बाह्य क्षेत्रों के साथ-साथ पारिवारिक असंगतियों को भी झेलना पड़ा। इन विसंगतियों के बावजूद वह निराश नहीं हुई न ही पैर पीछे किए वह अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए तत्पर रही। दोहरे तनावों एवं दबावों को भी सहर्ष स्वीकार करने लगी - "स्वावलम्बी होने से औरत का स्वाभिमान बढ़ता है और उनका आत्म सम्मान भी। साथ ही वह प्रतिकूल परिस्थितियों और प्रतिबंधों को नकारने की क्षमता हासिल कर लेती है। समाज की संकीर्ण परंपराओं से परे मुक्ति की राह पर चल सकती है। दरअसल औरत को कमजोर बनाने में उसकी परजीवी होने के साथ-साथ समाज की आचार-संहिताएँ भी जिम्मेवार हैं। स्वावलम्बन उसे उन बेड़ियों से मुक्त करने का एक मजबूत आधार देता है।"[2]

वर्तमान समाज पूरी तरह 'अर्थ' पर आश्रित है। 'अर्थ' की महत्ता के कारण हर पुरुष पढ़ी लिखी कमाऊ लड़की से ही विवाह करना चाहता है। माता-पिता भी अपनी बेटी को शिक्षित एवं आत्मनिर्भर देखना चाहते हैं। शिक्षा, स्वाभिमान एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता ने स्त्री को एक हद तक मुक्त अवश्य किया है किन्तु वास्तव में समाज आज भी उसे पूरी तरह बराबरी का दर्जा नहीं दे पाया है। ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में स्त्रियाँ आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों में अभी भी पूरी तरह भाग नहीं ले रही हैं। नगरों तथा महानगरों में रहने वाली प्रत्येक वर्ग की कामकाजी महिलाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अशिक्षित स्त्रियों का कामकाजी रूप उनकी आर्थिक विभिन्नता का ही परिणाम है। ये ग्रामीण स्त्रियाँ व्यक्तित्व के विकास के लिए नहीं बल्कि मजबूरी वश, अपना एवं परिवार का भरण-पोषण करने के लिए कामकाजी बनी। ये अशिक्षित स्त्रियाँ घरेलू काम-काज के साथ-साथ सिलाई-कढ़ाई, बुनाई, खेत-खलिहान, फैक्ट्री आदि में काम करके अपनी तथा अपने परिवार की गुजर बसर करती है। ग्रामीण परिवेश में विधवा स्त्रियों की स्थिति अत्यन्त दयनीय है

---

1 प्रभा खेतान : *स्त्री उपेक्षिता (हिन्दी रूपान्तर-द सैकेण्ड सेक्स, लेखिका सीमोन द बोउवा),* पृ. 50

2 रमणिका गुप्ता : *स्त्री विमर्श : कलम और कुदाल के बहाने,* पृ. 15

आत्मनिर्भरता, सम्पत्ति पर अधिकार तथा पुनर्विवाह से इन स्त्रियों की स्थिति में काफी हद तक सुधार आया है। जागरूक एवं स्वाभिमानी स्त्रियाँ इन कुरीतियों को तोड़कर आगे बढ़ती हैं तथा अपने जीवन को सार्थक बनाती हैं।

कामकाजी माँ चाहकर भी बच्चों को उतना समय नहीं दे पाती जितना वह देना चाहती है। चित्रा मुद्‌गल ने ऐसी मजबूर माँओं को आधार बनाकर अनेक कहानियाँ लिखी हैं। 'पाली का आदमी' में नौकरी पेशा का दर्द अभिव्यंजित करते हुए कहा गया है कि - "उसके नौकरी करने से उसकी बेटी सोनू को असमय में ही गृहस्थी का पूरा भार उठाना पड़ता है।" उसका पति रवि व्यंग्य करते हुए कहता है - ''नीरू को नौकरी का शौक है और सोनू को गृहस्थी का।"[3] चित्रा जी ने अपनी कहानियों में उन स्त्रियों का चित्रण किया है जो बौद्धिक एवं तार्किक दृष्टि से अपने निर्णय लेने में सक्षम हैं। हृदय की जगह बुद्धि को अपनाना इन स्त्रियों की प्रमुख विशेषता है। ये विशेषता इन स्त्रियों में आर्थिक आत्मनिर्भरता की वजह से आई है। 'मोरचे पर' कहानी की नायिका रिन्नी का पति शहीद हो जाता है। पति सुदीप का बच्चों से बड़ा लगाव था उसकी मृत्यु के बाद सारी जिम्मेदारी रिम्मी पर ही आ गई थी। चित्रा जी ने रिन्नी के माध्यम से स्त्री चेतना के एक नए कोम को हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है। पति की मृत्यु के बाद उसका जीना एकदम बदल-सा गया था। घर-बाहर की सारी जिम्मेदारी उसके सर पर आ गई। रामसिंह ने देखा था कि बीबीजी में हिम्मत की कमी नहीं है - ''जिम्मेदारियाँ चाहे घर की हों या बाहर की हो, बगैर चेहरे पर शिकन लाए निभा रही हैं। दूसरी औरत होती तो अब तक बिस्तर पकड़ लेती।''[4]

चित्रा जी की कहानियों में स्त्रियाँ तार्किक दृष्टि से अपना निर्णय लेती है। भावुकता की जगह वह बौद्धिक निर्णय लेती है। ये स्त्रियाँ अन्याय को सहती नहीं बल्कि अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती है, संघर्ष करती है। स्त्री मन की अटल गहराईयों को चित्रा जी ने अपनी कहानियों में व्यक्त किया है। स्त्री रचनाकार होने के कारण स्त्री मन की सूक्ष्म पकड़ इनकी कहानियों में व्यक्त हुई है। आज स्त्री पहले की तुलना में अत्यधिक पढ़ी-लिखी एवं सम्पन्न है। शिक्षित ही नहीं वह पुरुषों के समकक्ष खड़ी है। 'प्रमोशन' कहानी की नायिका ललिता एक शिक्षित स्त्री है। अपनी नौकरी वह बहुत मेहनत एवं ईमानदारी से करती है जिससे उसे प्रमोशन मिलता है। प्रमोशन मिलने की खुशी में वह अपने बॉस को अपने घर बुलाना चाहती है किन्तु उसका पति सहमत नहीं होता है। सुभाष ललिता को भला बुरा सुनाता है - "जानता हूँ डॉ. कोठारी तुम पर इतने मेहरबान क्यों हैं ... इस कंपनी में नौकरी करते हुए तुम्हें तीन साल भी पूरे नहीं हुए, तीन

---

3 चित्रा मुद्‌गल : *पाली का आदमी, लाक्षागृह* (क.सं.)

4 चित्रा मुद्‌गल : *आदि अनादि-2,* पृ. 65

साल में इतना बड़ा प्रमोशन। विभाग में तुम्हारी बनिस्बत अनेक वरिष्ठ अनुभवी योग्य व्यक्ति पड़े हैं।”

21वीं सदी में स्त्री की स्थिति में काफी बदलाव आया, अब वह खुद अपने बारे में सोचने लगी। अभी तक स्त्री की ओर से कहा जाता था किन्तु अब स्त्री स्वयं कहने लगी। वह जागरूक हो गई है। चित्रा मुद्गल ने जो पात्र चुने वे अपनी समस्याओं का समाधान खुद ढूँढ़ते हैं, किसी पर निर्भर नहीं रहते हैं। उसी से प्रेरणा लेकर स्वयं को सामान्य मानने वाली स्त्री में भी अभिव्यक्ति की ललक जगी। ‘बावजूद इसके’ एक संघर्षशील स्त्री की कहानी है। दूसरी नायिका प्रीति अपने पति गोयल के व्यवहार से दुखी रहती है। गोयल एक अहंकारी एवं सामंती प्रवृत्ति का इंसान है उसका यह व्यवहार प्रीति को बिल्कुल पसंद नहीं आता। उन दोनों की एक बेटी होती है। बेटी की अच्छी परवरिश हो इसके लिए वह अपने पति की ज्यादतियों को सहती है। वह उसके साथ मारपीट करता है उसके देह पर मारपीट के निशान बन जाते हैं लेकिन वह सहती है सिर्फ अपनी बेटी के लिए। उसकी बेटी की आकस्मिक मृत्यु हो जाती है जिससे प्रीति टूट जाती है और अब उस घर में रहने की उसके पास कोई वजह नहीं बचती है। गोयल एवं उसके घर को छोड़कर प्रीति मायके आ जाती है। मायके में वह किसी पर बोझ नहीं बनना चाहती इसलिए वह एक होटल में नौकरी करने लगती है लेकिन गोयल यहाँ भी उसे परेशान करता है तथा नौकरी छोड़ने पर मजबूर करता है। प्रीति डगमगाती है विचलित होती है किन्तु मायके के सपोर्ट की वजह से वह उचित निर्णय लेती है। वह नौकरी नहीं छोड़ती है - “सीढ़ियाँ उतरते-उतरते ठिठक गयी। कहाँ-कहाँ से भागेगी? गोयल के लिए नौकरी छोड़ दें? लौट जाएं? भैया के लिए करती रहे।”[5]

स्त्री पति के दुर्व्यवहार को नियति नहीं मानती है वह उसका विरोध करती है। हाँ ये अलग बात है कि स्त्री को पुरुष की सत्ता नकारने या उसके विद्रोह करने की कीमत चुकानी पड़ती है। पुरुष के अहं को ठेस पहुँचती है तो वह बौखला जाता है। चित्रा मुद्गल की कहानी ‘इस हमाम में’ की नायिका अंजा घर-घर कूड़ा उठाने का काम करती है। जब वह घरों में कूड़ा उठाने जाती है तो घर की मालकिनों से उससे बातचीत भी होती है। एक घर की मालकिन दिवा से उसकी अच्छी जमती है। जब वह कूड़ा लेने जाती है तो दिवा उसके साथ बराबरी का व्यवहार करती है। उसे चाय पानी पिलाती है। दिवा का पति उसके साथ दुर्व्यवहार करता है। पढ़ा-लिखा होने के बावजूद उसके साथ क्रूर एवं अमानवीय व्यवहार करता है। एक दिन कूड़ा लेने अंजा नहीं आती है उसकी जगह एक वृद्ध व्यक्ति कूड़ लेने आता है। दिवा उस वृद्ध व्यक्ति से पूछती है कि अंजा

---

5 *आदि अनादि,* भाग-1, पृ. 126

क्यों नहीं आई तो वह बताता है कि ''रात मियां-बीवी में खूब झगड़ा हुआ। मरद जात, लुगाई की सहन नहीं हुई, हाथ उठ गया। अंजा ने ताव में कुछ खा-पी लिया। वाडिया अस्पताल में पड़ी है। अभी तक होश नहीं आया।''[6]

चित्रा मुद्‌गल ने अपनी कहानियों के माध्यम से एक नई बात समाज के सम्मुख रखी कि हर व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार जीना चाहता है और यह उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। हर स्त्री-पुरुष अपनी इस स्वाभाविक प्रवृत्ति को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील है। परंपरागत स्त्री समाज की मान्यताओं का पालन करती है लेकिन आधुनिक स्त्री इन मान्यताओं का पालन तक नहीं करती है जहाँ तक करना चाहती है। ये स्त्रियाँ समाज, परिवार, पति की इच्छाओं से ज्यादा अपनी इच्छाओं को महत्व देती है। वह अपना जीवन अपनी तरह से जीना चाहती है। लेखिका ने त्रिशंकु कहानी के माध्यम से अपनी इस भावना को व्यक्त किया है। बंडू की माँ चेतनायुक्त स्त्री है। पति से तंग आकर वह पति को छोड़कर अपने प्रेमी के साथ रहने का फैसला करती है। कहानी की शुरूआत में ऐसा महसूस होता है कि वह अपनी जिम्मेदारियों से भाग रही है लेकिन ऐसा नहीं है। वह एक आधुनिक स्त्री है जो पति की गलत आदतों को बर्दाश्त नहीं करती है वह कहती है - ''मैं खून पिला-पिला के बच्चा पालती हूँ और तू हरामखोर वो कांड के साथ मस्ती मारता - साआला हाथ लगा के देख अभी मेरे को?।''[7]

आधुनिक स्त्री आत्मनिर्भर है, वह स्वावलंबी है। जीवन की हर समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना करती है। चित्रा मुद्‌गल की कहानी 'बावजूद इसके' की नायिका प्रीति अपने पति से बहुत परेशान है। उसका पति गोयल हमेशा बुरा बर्ताव करता है। पति की वजह से ही उसकी बेटी की मौत हो जाती है जिससे उसकी सहनशीलता खत्म हो जाती है। इस असहनीय एवं निर्मम व्यवहार ने उसे विरोध करना सिखाया। वह पति का घर छोड़ मायके आ जाती है तथा नौकरी करने लगती है। पति गोयल तब भी उसका पीछा नहीं छोड़ता। बार-बार उसे परेशान करता है लेकिन प्रीति अपने निर्णय पर अड़ी रहती है तथा वापस उसके पास नहीं जाती है। वह आत्म-सम्मान के साथ जीना चाहती है। चित्रा मुद्‌गल की कहानियों की यह विशेषता है कि वे एक ऐसी स्त्री की कथा कहती हैं जो विरोध करती है। 'बावजूद इसके' कहानी एक स्तर पर पुरुष के विरुद्ध जागरण की कथा है जो आधुनिक स्त्री में बढ़ती निर्णय क्षमता, अन्याय का विरोध करने वाली संकल्पधर्मी स्त्री की कथा है। इस कहानी के माध्यम से चित्रा मुद्‌गल ने एक ऐसे वर्ग के पुरुषों के बारे में बताया है जो स्त्री को केवल साधन मानते हैं। डॉ. विजया कहती है -

6 चित्रा मुद्‌गल : *आदि-अनादि,* भाग-2, पृ. 60

7 चित्रा मुद्‌गल : *मामला आगे बढ़ेगा अभी,* पृ. 48

Devbhoomi Journal of Multidisciplinary Research (DJMR)
URL: www.usvv.ac.in/djmr Email: djmr@usvv.ac.in
Volume-1, Issue-2, Jul - Dec 2023

"आधुनिक शिक्षा-दीक्षा के कारण पुरुष स्त्री के व्यक्तित्व पर हावी होना चाहता है और स्त्री कठपुतली की हद तक समर्पित होना नहीं चाहती। पुरुष चाहता है कि उसके मनोनुकूल स्त्री जिए और यही उम्मीद स्त्री भी करती है। चाहे विवाह पारिवारिक हो या प्रेम द्वारा दोनों सजग व्यक्तित्व जब एक-दूसरे से टकराता है तब तनाव की स्थिति उभरती है।"[8]

चित्रा मुद्गल जी का अनुभव संसार अत्यन्त व्यापक है। व्यापकता के साथ-साथ बहुरंगी भी है। गाँव से लेकर शहर तक सभी स्त्रियों के अनुभव उनके पास हैं। उनकी कहानियों में समाज की स्त्री-चेतना को साफ-साफ देखा जा सकता है। उनकी स्त्री-चेतना एक खास दृष्टि, उद्देश्य और मानवीय प्रतिबद्धता को लेकर आगे बढ़ती है। शहर की झोपड़ियों में रहने वाली बंदू की माँ की व्यथा को चित्रा जी ने अपनी कहानी 'त्रिशंकु' के माध्यम से व्यक्त किया है। बंदू का पिता उसकी माँ से बिल्कुल लगाव नहीं रखता। फैक्टरी से लौटते हुए वह सीधे कभी घर नहीं आता। देर रात घर आकर अपनी बीवी के साथ मारपीट करता है। दिन-ब-दिन उसका यह रवैया बढ़ता जाता है। बंदू की माँ एक दिन डटकर अपने पति का मुकाबला करती है और कहती है - "भडूवा एक पैसा नहीं देता, मैं खून पिला-पिला के बच्चा पालती और तू हरामखोर वो रांड के साथ मस्ती मारता-साआला हाथ लगा के देख अभी मेरे को? देख।"[9]

चित्रा मुद्गल जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से हमारे सम्मुख एक नई बात रखती है वह यह है कि हर व्यक्ति अपनी इच्छानुसार जीने के लिए स्वतंत्र है चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। परंपरागत स्त्री समाज द्वारा बनाई मान्यताओं को स्वीकार करती थी। उसी के अनुरूप अपना जीवन-यापन करती थी किन्तु आर्थिक रूप से आर्थिक आत्मनिर्भर स्त्री अपने जीवन की राह अपने अनुसार चुनती है। बंदू की माँ भी अपनी राह खुद चुनती है एवं पति को छोड़कर प्रेमी के साथ जीवन जीने का निर्णय लेती है तथा पारिवरिक एवं सामाजिक बोझ से अपने आपको मुक्त करती है।

चित्रा मुद्गल जी ने अपनी कहानियों में स्त्री अस्मिता को चित्रित किया है। चित्रा मुद्गल जी स्त्री स्वतंत्रता की पक्षधर हैं पर उसका अंधानुकरण नहीं करती हैं। 'हस्तक्षेप' कहानी में चित्रा जी इसे प्रभाव से युक्त अंकित जैसी पात्र को चित्रित किया है जो इस बात से पूरी तरह वाकिफ है कि स्त्री की वास्तविक स्वतंत्रता और उसकी गरिमा किस बात में है। वेद प्रकाश अमिताभ जी ने लिखा है - "नारी स्वाधीनता या नारी मुक्ति के आकर्षण और उत्तेजक स्वर को चस्पा भर नहीं किया है, उनका बोध गंभीर विचारमंथन से निर्मित हुआ है और कहानियों की अन्तर्वस्तु का

---

8 विजया यादव : *साठोत्तरी हिंदी कहानी और महिला लेखिकाएँ,* पृ. 88

9 चित्रा मुद्गल : *मामला आगे बढ़ेगा अभी,* पृ. 48

अभिन्न अंग और संश्लिष्ट अंग बनकर व्यक्त हुआ है।"[10]

आधुनिक स्त्री आत्मनिर्भर है। वह अपनी अस्मिता के प्रति सचेत है। वह परंपरागत मान्यताओं का विरोध करती है उसका स्वर विद्रोही हो गया है। चित्रा मुद्गल जी ने अपनी 'शून्य' कहानी के माध्यम से ऐसी मध्यवर्गीय स्त्री को चित्रित किया है जो स्व की चेतना से संपन्न है, शिक्षित है एवं आत्मनिर्भर भी है। राकेश सरला से विवाह करता है किन्तु वह प्रेम विवाहित स्त्री बेला से करता है। शादी के बाद राकेश एवं सरला का एक बेटा होता है। बच्चे के जन्म के बाद भी राकेश जिम्मेदारी नहीं समझता है। बेला के प्रेम ने राकेश को सरला के प्रति हिंसक बना दिया। सरला उसका साथ छोड़ देती है और नौकरी करके जीवन-यापन करना चाहती है। वह अपने बच्चे को भी साथ लेकर नहीं जाना चाहती है। "कहानी की सरला स्थितियों के कारण पति को छोड़कर आत्मनिर्भर होती है। 'स्व' के प्रति जागरूक होकर अपनी आत्मा और अस्तित्व की रक्षा करती है। वह पति के हाथ की कठपुतली बनने से इंकार करती है। अपने अधिकार के लिए सुप्रीम कोर्ट तक जाने के लिए तैयार होना उसके विद्रोह को प्रकट करता है।"[11]

आज की स्त्री अपने व्यक्तित्व व अस्मिता के लिए स्थान की खोज में है। लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर स्त्री घर की चौखट लांघ बाहरी दुनिया में कदम रखा एवं पुरुष के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चली। वह किसी भी क्षेत्र में पुरुष से कम नहीं है बल्कि अत्यधिक कुशलता से अपनी दोहरी जिम्मेदारियों का निर्वाह कर रही है। चित्रा जी ने अधिकांशतः स्वावलंबी स्त्रियों का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। आज स्त्रियाँ जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो रही हैं। इससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ा है। वह हर प्रकार की समस्या एवं समाज की हर चुनौती से लड़ने के लिए तैयार है। हर चुनौतियों का सामना वह अपने बलबूते पर करने में सक्षम हैं - "कामकाजी नारी अपने आत्मविश्वास और आत्मसंतोष को अपने कार्य द्वारा ही पा लेती हैं। उसे अब किसी की झूठी प्रशंसा की आवश्यकता ही नहीं रहती। कामकाजी नारियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वह करती है, कर रही है और करेगी। हार कर भी उसने जीना सीखा है। उसने सिद्ध कर दिखाया है कि पुरुषों के बिना भी वह बेहतर जिंदगी जी सकती हैं।"[12]

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि चित्रा मुद्गल जी का जीवन एवं साहित्य पाठक के लिए एक प्रेरणा है। उनका साहित्य पढ़ने वाला पाठक अपनी अनुभूतियों को उनकी रचनाओं में पाता है। जिससे वह तादात्म्य स्थापित कर लेता है। उनके सभी पात्र समाज से लड़ना जानते हैं, संघर्ष

---

[10] *समीक्षा,* जुलाई-सितम्बर 1993, पृ. 22

[11] मंगल कप्पीकेरे : *साठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में नारी,* पृ. 78

[12] वेदवती चौधरी : *नवम दशक की कहानियों में कामकाजी नारी की भूमिका,* पृ. 221

करना जानते हैं, जूझते लड़ते कभी वे लहुलुहान होते हैं अपने लक्ष्य की प्राप्ति करते हैं। चित्रा जी की कहानियों में कामकाजी स्त्री के सामाजिक, सांस्कृतिक, अर्थिक एवं राजनीतिक संघर्षों को रेखांकित किया है। चित्रा जी की यह महत्वपूर्ण विशेषता है कि इन्होंने भोगे हुए यथार्थ को जीवंतता के साथ प्रस्तुत किया है। स्त्री होने के नाते स्त्री की पीड़ा से अवगत थीं। यही कारण है कि चित्रा जी अपने आरंभिक लेखन से लेकर आज तक बराबर सम्मानित होती रही हैं और भविष्य में भी सम्मानित होती रहेंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चित्रा मुद्गल, लाक्षागृह, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 1982
2. चित्रा मुद्गल, मामला आगे बढ़ेगा अभी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1995
3. चित्रा मुद्गल, आदि-अनादि (भाग-1, 2), सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, 2009
4. प्रभा खेतान : *स्त्री उपेक्षिता (हिंदी रूपांतरण - द सेकेण्ड सेक्स-लेखिका सीमोन द बोउवा),* हिन्दी पॉकेट बुक्स प्रा.लि., दिल्ली, सं. 2002.
5. मंगल कप्पीकेरे : *साठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में नारी,* विकास प्रकाशन, कानपुर, सं. 2002
6. रमणिका गुप्ता : *स्त्री विमर्श : कलम और कुदाल के बहाने,* शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2006
7. विजया वारद रागा : *साठोत्तरी हिंदी कहानी और महिला लेखिकाएँ,* विकास प्रकाशन, कानपुर, सं. 1993
8. वेदवती चौधरी : *नवम् दशम की कहानियों में कामकाजी नारी की भूमिका,* अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, सं. 2003